

॥ आयुश्य सूक्तम ॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उज्जहार प्राणैह शिरह क्रुत्तिवासाह पिनाकी ।
ईशानो देवह स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविशा घृतेन ॥ १ ॥
विभ्राजमानह सरिरस्य मध्या-द्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात ।
स मृत्युपाशानपनुद्य घोरानिहायुशेणो घृतमत्तु देवह ॥ २ ॥
ब्रह्मज्योतिर ब्रह्म पत्नीशु गर्भम यमादधात पुरुरूपम जयन्तम ।
सुवर्णरम्भग्रहम अर्कम अर्च्यम तमायुशे वर्धयामो घृतेन
॥ ३ ॥

श्रियम लक्ष्मीम औबलाम अम्बिकाम गाम शशठीम च
यामिन्द्रसेनेत्युदाहुहु ।
ताम विद्याम ब्रह्मयोनिग्म सरूपाम इह आयुशे तर्पयामो घेउतेन
॥ ४ ॥

दाक्शायण्यह सर्वयोन्यह स योन्यह सहस्रशो विश्वरूपा विरूपाह ।
ससूनवह सपतयह सयूथ्या आयुशेणो घृतमिदम जुशन्ताम ॥ ५ ॥
दिव्या गणा बहुरूपाह पुराणा आयुशिछदो नह प्रमथन्तु वीरान ।
तेभ्यो जुहोमि बहुधा घृतेन मा नह प्रजाग्म रीरिशो मोत वीरान
॥ ६ ॥

एकह पुरस्तात य इदम बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाह ।
यमप्येति भुवनग्म साम्पराये स नो हविर्घृत मिहायुशेत्तु देवह
॥ ७ ॥

वसून रुद्रान आदित्यान मरुतो अथ साध्यान रुभून यक्शान

गन्धर्वाश्च

पित्रुश्च विश्वान् ।

भृगून सर्पाश्चाम्गरिसो अथ सर्वान् घृतगम हुत्वा स्वायुश्या
महयाम शश्वत ॥ ८ ॥

विश्वो त्वम नो अन्तमश्शर्मयच्छ सहन्त्य ।

प्रतेधारा मधुश्चुत उथ्सम दुहते अक्वितम ॥

ओम शान्तिह शान्तिह शान्तिहि ॥

www.yousigma.com